SWETA DUBEY
ASST.PROFESSOR,
GSCW B.Ed., PEDAGOGY OF SCHOOL SUBJECT
ECONOMICS,SEM-2, PAPER-VII A UNIT-I
TOPIC- CORRELATION OF ECONOMICS WITH OTHER SUBJECT
SUB TOPICE-CORRELATION WITH POLITICAL SCIENCE

(CIVICS)
PART-IV

Scanned with CamScanner

अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान (Economics and Political Science) :

अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में एक गहरा सम्बन्ध पाया जाता है । आरम्भ में इन दोनों का एक साथ ही अध्ययन किया जाता था यहां तक कि कुछ विशेषज्ञ अर्थशास्त्र को राजनैतिक अर्थयवस्था (Political Economy) भी कहते थे । राजनीति विज्ञान मनुष्य और राज्य के सम्बन्ध का अध्ययन और अर्थशास्त्र मानवीय व्यववहार के आर्थिक पहलू का अध्ययन करता है । मानवीय - व्यववहार के आर्थिक पहलू पर देश की सरकार एवं देश की राजनैतिक परिस्थितियों का प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है । अगर राज्य न्यायपूर्ण कल्याणकारी होने के साथ-साथ देश में शान्ति सुव्यवस्था, सुरक्षा का वातावरण स्थापित करने में सफल है तो देश के नागरिक मेहनत एवं लगन के साथ काम करेंगे पैदावार बढ़ेगी और देश समृद्धि एवं विकास की ओर बढ़ेगा । इसके अतिरिक्त राज्य की नीतियों का देश के उत्पादन, विनिमय वितरण तथा उपभोग पर भी प्रभाव पड़ता है । राजनीति विज्ञान के अनेक वाद-पूंजीवाद, समाजवाद, साम्यवाद, अर्थशास्त्र अध्ययन में भी महत्वपूर्ण माने जाते हैं । इन वादों पर आधारित विभिन्न आर्थिक अवस्थाओं का जन्म हुआ है ।

Scanned with CamScanner

इसी प्रकार से अर्थशास्त्र भी राजनीति विज्ञान को प्रमाणित करता है । किसी देश की आर्थिक स्थिति काफी हद तक वहां की शासन व्यवस्था और आर्थिक नीतियों को प्रमाणित करती हैं। कर प्रणाली, व्यय का ढंग, विदेशी व्यापार सम्बन्धी नीतियां एवं करार, नियोजित अर्थव्यवस्था का अपनाना आदि देश की आर्थिक स्थिति के अनुसार ही निर्धारित होते हैं । इसके अतिरिक्त अक्सर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक संघर्षो के पीछे आर्थिक उद्देश्य ही होते हैं ।

Scanned with CamScanner

नागरिकशास्त्र सुखद सामाजिक जीवन की कला तथा नागरिकों के कर्त्तव्यों व अधिकारों का अध्ययन करता है। इस प्रकार दोनों ही शास्त्र मानव का अध्ययन करते हैं। परन्तु उनके क्षेत्र भिन्न-भिन्न हैं। एक केवल मनुष्य के अर्थ-सम्बन्धित क्रिया-कलापों तथा दूसरा नागरिकता से सम्बन्धित विषयों की व्याख्या करता है। इस विभिन्नता के होते हुए भी दोनों शास्त्र एक-दूसरे के सहयोगी हैं।

अर्थशास्त्र का नागरिकशास्त्र पर निम्न रूपों में प्रभाव पड़ता है--

1. नागरिक संस्थाओं का आरम्भ आर्थिक आवश्यकताओं की देन है।
2. आर्थिक परिस्थितियाँ नागरिक परिस्थितियों को प्रभावित करती हैं।
3. आर्थिक विचार राजनैतिक विचारों के आधार हैं।
4. आर्थिक नीतियाँ राजनैतिक नीतियों के निर्माण में सहायक हैं।

नागरिकशास्त्र का अर्थशास्त्र पर प्रभाव निम्न रूपों में पड़ता है--

1. राज्य आर्थिक नीतियों का निर्धारण करता है।
2. राज्य उत्पादन तथा वितरण का नियमन करता है।
3. राज्य कर-निर्धारण करके नागरिक के आर्थिक जीवन को प्रभावित करता है।

Scanned with CamScanner

अर्थशास्त्र नागरिकशास्त्र के आधार के रूप में—नागरिकशास्त्र अर्थशास्त्र के अभाव में एक उपयोगी शास्त्र नहीं बन सकता। प्रत्येक मनुष्य की कुछ मौलिक आवश्यकताएँ होती हैं, उदाहरणार्थ—रोटी, कपड़ा और मकान। जिस समाज में मानव की इन आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं की जायेगी वहाँ सफल नागरिकता असम्भव है। गरीबी नागरिक धर्म का नाश करती है, अर्थात् दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि गरीबी मानव को कर्त्तव्य-विमुख कर देती है। नागरिकों की मौलिक आवश्यकताएँ पूर्ण नहीं होंगी तो उनके कर्त्तव्य-विमुख होने की सम्भावना बनी रहेगी। नागरिकशास्त्र का आदर्श तभी सफल हो सकता है, जब समाज की आर्थिक स्थिति अच्छी होगी।

नागरिक के अधिकारों का स्वरूप तथा उनके प्रयोग की सीमा अधिकतर समाज की आर्थिक व्यवस्था द्वारा निर्धारित होती है। उदाहरणार्थ, पूँजीवादी व्यवस्था में व्यक्ति को निजी सम्पत्ति रखने का अधिकार असीमित होता है जबकि समाजवादी व्यवस्था में यह अधिकार सीमित होता है। रूस के संविधान में यह प्रावधान है कि **"जो व्यक्ति काम करेगा वही व्यक्ति खायेगा।"**

अर्थशास्त्र मनुष्य के आर्थिक जीवन का अध्ययन करता है। एक देश की आर्थिक स्थिति आदर्श नागरिकता की कल्पना को साकार रूप प्रदान करने में आधार का कार्य करती है। अर्थशास्त्र एक उन्नत राज्य के निर्माण में योग देकर अप्रत्यक्ष रूप से आदर्श नागरिकता को सम्भव बनाता है।

Scanned with CamScanner

नागरिकशास्त्र अर्थशास्त्र का सहायक--जब अर्थशास्त्र धन की उत्पत्ति, वितरण, विनिमय आदि का विवेचन करता है तो उसे नागरिकशास्त्र की आवश्यकता होती है। नागरिकशास्त्र ऐसी व्यवस्था के विषय में बताता है कि नागरिक पर कौन-कौन से कर लगाये जायें और उनको किस प्रकार वसूल किया जाये ? यह शास्त्र इस बात को बताता है कि कर-प्रणाली जनता के हित में होनी चाहिये। इस प्रकार नागरिकशास्त्र जनहित का सिद्धान्त अर्थशास्त्र को प्रदान करता है। नागरिकशास्त्र अर्थशास्त्र की साधनाओं को पूर्ण करने में सहायता प्रदान करता है।

Scanned with CamScanner